IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 11, Issue 5, September - October 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.583

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 |

भारतीय निर्वाचन प्रणाली में राजनैतिक चुनौतियाँ एवं सुधार हेतु सुझाव

प्रभुराम बामणियाँ

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान

भारती विद्यापीठ महाविद्यालय, राजलदेसर (चूरु) राजस्थान – भारत

सारांश

भारतीय लोकतंत्र में निर्वाचन प्रणाली विश्व के सबसे बड़े और जटिल लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में से एक है, जो विविधता, समावेशिता, और संवैधानिक मूल्यों पर आधारित है। यह शोध आलेख भारत की निर्वाचन प्रणाली के ऐतिहासिक विकास, संरचना, चुनौतियों, और समकालीन सुधारों का विश्लेषण करता है। इसमें भारतीय चुनाव आयोग (ECI) की भूमिका, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, बहु–दलीय प्रणाली, और चुनावी प्रौद्योगिकी (जैसे EVM और VVPAT) के प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, इस शोध में चुनावी भ्रष्टाचार, जाति–धर्म आधारित राजनीति, धन–बल के दुरुपयोग, और महिलाओं व अल्पसंख्यकों की प्रतिनिधित्व संबंधी समस्याओं की पड़ताल की गई है। वर्तमान सुधार प्रयासों, जैसे डिजिटल मतदान और चुनावी फंडिंग में पारदर्शिता, के साथ–साथ भारतीय लोकतंत्र में निर्वाचन प्रणाली की स्थिरता और भविष्य की दिशा पर चर्चा की गई है। यह अध्ययन मिश्रित शोध पद्धति (गुणात्मक और मात्रात्मक) पर आधारित है, जो संवैधानिक प्रावधानों, चुनावी डेटा, और नीतिगत विश्लेषण को समेटता है। शोध का उद्देश्य निर्वाचन प्रणाली की प्रभावकारिता को बढ़ाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना है, जो भारतीय लोकतंत्र की मजबूती और समावेशी चरित्र को सुनिश्चित कर सके।

मूल शब्द – भारतीय चुनाव आयोग, EVM, बहु–दलीय प्रणाली, चुनावी सुधार, लोकतांत्रिक समावेशन

प्रस्तावना :

भारतीय लोकतंत्र, जिसे "लोकतंत्र का मंदिर" कहा जाता है, विश्व के सबसे जीवंत और जटिल लोकतांत्रिक प्रयोगों में से एक है। 1950 में संविधान लागू होने के बाद से भारत ने निरंतर चुनावी प्रक्रियाओं के माध्यम से शासन की सत्ता का हस्तांतरण सुनिश्चित किया है। 90 करोड़ से अधिक मतदाताओं की भागीदारी, 4,000 से ज्यादा राजनीतिक दल, और 10 लाख से अधिक मतदान केंद्रों के साथ भारतीय चुनाव प्रणाली न केवल एक प्रशासनिक चमत्कार है, बल्कि लोकतंत्र की सार्वभौमिक आकांक्षाओं का प्रतीक भी है। हालाँकि, यह प्रणाली आज अनेक राजनीतिक चुनौतियों के द्वंद्व में उलझी हुई है, जो लोकतांत्रिक आदर्शों और व्यावहारिक वास्तविकताओं के बीच एक गहरी खाई को उजागर करती हैं। भारत ने 1951–52 में पहले आम चुनाव से ही एक समावेशी और धर्मनिरपेक्ष चुनावी मॉडल की नींव रखी, जिसमें सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया गया। यह कदम उस समय के वैश्विक परिदृश्य में एक क्रांतिकारी निर्णय था, जब अधिकांश विकासशील देशों में लोकतंत्र अस्तित्वहीन था। भारतीय निर्वाचन आयोग (ECI) की स्थापना और संवैधानिक स्वायत्तता ने इस प्रणाली को विश्वसनीयता प्रदान की। लेकिन, 7 दशकों के सफर में चुनावी राजनीति ने नए रूप धारण किए हैं। जहाँ एक ओर EVM, VVPAT, और डिजिटल मतदाता पहचान पत्र जैसी तकनीकी प्रगति ने प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया है, वहीं दूसरी ओर धन–बल, जाति–धर्म की राजनीति, और सूचना युद्ध जैसी समस्याएँ गहराती जा रही हैं।

भारतीय निर्वाचन प्रणाली – एक अवलोकन :

- **लोकतंत्र की आधारशिला** – भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहाँ जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है। यह चुनाव प्रक्रिया भारतीय संविधान द्वारा निर्देशित है, जो देश को एक सुचारू और निष्पक्ष निर्वाचन प्रणाली प्रदान करता है।
- **संवैधानिक प्रावधान** – भारतीय संविधान के भाग XV में अनुच्छेद 324 से 329 तक निर्वाचन से संबंधित प्रावधान हैं। अनुच्छेद 324 चुनाव आयोग की स्थापना का प्रावधान करता है, जो चुनावों के संचालन और नियंत्रण के लिए जिम्मेदार है। अन्य अनुच्छेदों में मतदाता सूची, निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन, चुनाव प्रक्रिया, और चुनाव संबंधी विवादों के निपटारे के बारे में वर्णन है।
- **चुनाव आयोग की भूमिका** – चुनाव आयोग एक स्वतंत्र और स्वायत्त संस्था है। इसकी जिम्मेदारी स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करना है। चुनाव आयोग मतदाता सूची तैयार करता है, चुनाव की तारीखों की घोषणा करता है, उम्मीदवारों के नामांकन पत्रों की जांच करता है, और चुनाव प्रक्रिया का संचालन करता है।

- **विभिन्न चुनावों की प्रक्रिया** – भारत में विभिन्न स्तरों पर चुनाव होते हैं, जैसे कि लोकसभा चुनाव, विधानसभा चुनाव, पंचायत चुनाव, और नगर निकाय चुनाव। इन सभी चुनावों की प्रक्रिया अलग–अलग होती है, लेकिन सभी का उद्देश्य जनता को अपने प्रतिनिधि चुनने का अवसर प्रदान करना है।
- **स्वतंत्रता और निष्पक्षता सुनिश्चित करना** – भारतीय संविधान और चुनाव कानून स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए कई प्रावधान करते हैं। मतदाता सूची में गड़बड़ी करने, उम्मीदवारों को धमकाने, और चुनाव में रिश्वतखोरी करने जैसे कार्यों को गैरकानूनी घोषित किया गया है। चुनाव आयोग इन कानूनों का पालन सुनिश्चित करता है और चुनाव संबंधी विवादों का निपटारा करता है।

भारतीय चुनाव प्रणाली और राजनीतिक चुनौतियाँ :

भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा और जटिल लोकतांत्रिक ढाँचा है, जहाँ 90 करोड़ से अधिक मतदाताओं की भागीदारी वाली निर्वाचन प्रणाली लोकतंत्र की जीवंतता का प्रतीक है। हालाँकि, यह प्रणाली कई गंभीर राजनीतिक चुनौतियों से जूझ रही है, जो न केवल चुनावी निष्पक्षता को प्रभावित करती हैं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी सवाल खड़े करती हैं। इन चुनौतियों को समझने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जा सकता है–

1. **चुनावी भ्रष्टाचार और धन–बल का प्रभुत्व** – भारतीय चुनावों में धन की भूमिका एक बड़ी समस्या बन गई है। उम्मीदवारों द्वारा चुनाव प्रचार पर होने वाला खर्च अक्सर निर्धारित सीमा से कहीं अधिक होता है। "ब्लैक मनी" और कॉर्पोरेट फंडिंग (जैसे चुनावी बॉन्ड) के माध्यम से धन का अंधाधुंध प्रवाह चुनावी प्रक्रिया को विकृत करता है। यह गरीब और संसाधनहीन उम्मीदवारों के लिए प्रतिस्पर्धा को असंतुलित कर देता है, जिससे लोकतंत्र "अमीरों के खेल" में बदलता दिखाई देता है।

2. **जाति और धर्म आधारित राजनीति** – भारतीय राजनीति में सामाजिक विभाजनों का चुनावी इस्तेमाल एक पुरानी समस्या है। राजनीतिक दल अक्सर जातिगत समीकरण या धार्मिक भावनाओं को भड़काकर वोट बैंक की राजनीति करते हैं। इससे समाज में विघटन पैदा होता है और विकास एवं राष्ट्रीय एकता जैसे मुद्दे पृष्ठभूमि में चले जाते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ क्षेत्रों में ष्जाति समीकरणष ही चुनावी रणनीति का केंद्र बन जाता है।

3. **महिलाओं और अल्पसंख्यकों का अल्पप्रतिनिधित्व** – भारतीय संसद और विधानसभाओं में महिलाओं की भागीदारी वैश्विक औसत (लगभग 27 प्रतिशत) से काफी नीचे है (वर्तमान में लगभग 14 प्रतिशत)। इसी प्रकार, मुस्लिम समुदाय जैसे अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व भी उनकी जनसंख्या के अनुपात में नहीं है। राजनीतिक दल अक्सर इन समूहों को "टोकनिज्म" तक सीमित रखते हैं, जो लोकतंत्र की समावेशी भावना के विपरीत है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 |

4. चुनावी हिंसा और बूथ कब्जा – कुछ राज्यों में, विशेषकर बिहार, पश्चिम बंगाल, और उत्तर प्रदेश में, चुनावी हिंसा और बूथ कैप्चरिंग की घटनाएँ अभी भी देखी जाती हैं। बाहुबल और भय के माध्यम से मतदाताओं को प्रभावित करना लोकतंत्र के लिए एक गंभीर खतरा है। हालाँकि भारतीय चुनाव आयोग (ECI) ने सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया है, फिर भी दबंग राजनीतिक तत्व अक्सर कानून को धता बताने में सफल हो जाते हैं।

5. मीडिया और सोशल मीडिया का दुरुपयोग – डिजिटल युग में फेक न्यूज, प्रोपेगैंडा, और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से मतदाताओं को गुमराह करना एक नई चुनौती बन गया है। राजनीतिक दल अक्सर भावनात्मक मुद्दों को उछालकर या विवादास्पद सामग्री वायरल करके जनमत को प्रभावित करते हैं। इससे तथ्यों पर आधारित चर्चा कमजोर होती है और समाज में ध्रुवीकरण बढ़ता है।

6. राजनीतिक दलों का अलोकतांत्रिक ढाँचा – अधिकांश भारतीय राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र का अभाव है। नेतृत्व अक्सर एक परिवार या गुट तक सीमित रहता है, जिससे नए और योग्य नेतृत्व के लिए अवसर सीमित हो जाते हैं। इसके अलावा, दल–बदल (डिफेक्शन) की घटनाएँ चुनावी जनादेश को कमजोर करती हैं।

7. चुनावी सुधारों की धीमी गति – भले ही भारतीय चुनाव आयोग ने म्टड, टटच।ज, और मतदाता पहचान पत्र जैसी तकनीकी पहलों से प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया है, लेकिन मौलिक सुधार अभी भी लंबित हैं। उदाहरण के लिए

उक्त चुनौतियों के समाधान हेतु सुझाव :

भारत में निर्वाचन प्रणाली में राजनैतिक समस्याओं के निवारण हेतु निम्न सुझाव अपनाए जा सकतें है। ये सुझाव न केवल चुनावी प्रणाली को पारदर्शी बनाएँगे, बल्कि लोकतंत्र में आम नागरिकों का विश्वास भी मजबूत करेंगे। हालाँकि, इन्हें लागू करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति, नागरिक सहयोग, और न्यायपालिका की सक्रियता आवश्यक है। जैसा कि डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने कहा था, ष्लोकतंत्र सिर्फ शासन का एक रूप नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का दर्शन है।ष इस दर्शन को साकार करने हेतु चुनावी सुधार अहम कदम हैं।

चुनावी खर्च पर सख्त निगरानी और डिजिटल लेनदेन को अनिवार्य बनाना :

इसके अंतर्गत चुनावी खर्च की निगरानी के लिए एक स्वतंत्र वित्तीय नियामक समिति गठित की जाए, जो उम्मीदवारों और राजनीतिक दलों के लेनदेन की वास्तविक समय (real-time) में ट्रैकिंग करे। डिजिटल भुगतान को अनिवार्य बनाया जाए, ताकि नकदी के अंधाधुंध प्रयोग पर रोक लग सके।

लाभ –

- ब्लैक मनी और गैर–पारदर्शी फंडिंग में कमी।
- छोटे और गैर–धनी उम्मीदवारों को समान अवसर मिलेंगे।

चुनौतियाँ –

- ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी।
- नकदी आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी।

महिलाओं और अल्पसंख्यकों के लिए संसदीय सीटों में आरक्षण :

महिला आरक्षण विधेयक (108वाँ संशोधन) को पारित कर संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की जाएँ। अल्पसंख्यक समुदायों (जैसे मुस्लिम, ईसाई) के लिए सामुदायिक आधारित कोटा बनाया जाए, ताकि उनकी जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो। जहाँ आरक्षित सीटों पर महिला और अल्पसंख्यक उम्मीदवार चुने जाएँ, लेकिन सामान्य सीटों पर भी उन्हें प्रतिस्पर्धा का अवसर मिले।

लाभ –

- लैंगिक और सामाजिक न्याय को बढ़ावा।
- नीति–निर्माण में विविध दृष्टिकोणों का समावेश।

राजनीतिक दलों के आंतरिक लोकतंत्र को कानूनी रूप से बाध्यकारी बनाना :

राजनीतिक दल अधिनियम में संशोधन कर दलों के अंदर नियमित चुनाव, पारदर्शी टिकट वितरण, और वित्तीय जवाबदेही अनिवार्य की जाए। दल–बदल (डिफेक्शन) के मामलों में दसवीं अनुसूची को और सख्त बनाया जाए, ताकि निर्वाचित प्रतिनिधि जनादेश का उल्लंघन न कर सकें।

पारदर्शिता के उपाय :

- दलों के आंतरिक निर्णयों और फंडिंग का सार्वजनिक ऑडिट।
- युवा और गैर–परिवारीकृत नेतृत्व को प्रोत्साहन हेतु कोटा।

मतदाता शिक्षा अभियानों को मजबूत करना :

निर्वाचन आयोग के साथ स्कूलों, कॉलेजों, और छळे को जोड़कर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएँ। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स (जैसे WhatsApp/YouTube) का उपयोग कर युवाओं तक पहुँच बनाई जाए।

लाभ

- मतदान का महत्व, EVM/VVPAT का सही उपयोग, और फेक न्यूज की पहचान।
- मतदाताओं को उनके मत के प्रभाव (जैसे स्थानीय विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य) से अवगत कराना।

चुनावी फंडिंग में पारदर्शिता और जवाबदेही :

चुनावी बॉन्ड की गुमनामी को समाप्त कर दानदाताओं का विवरण सार्वजनिक किया जाए। कॉर्पोरेट फंडिंग पर सीमा निर्धारित की जाए और CSR फंड्स का चुनावी उपयोग प्रतिबंधित हो। राजनीतिक दलों को सरकारी कोष से प्रति वोट आधारित फंडिंग दी जाए, जैसा कि कुछ यूरोपीय देशों में है।

लाभ :

- धन के असमान प्रभाव में कमी।
- छोटे दलों को वित्तीय समर्थन।

राष्ट्रीय चुनावी लोकपाल की स्थापना :

चुनावी भ्रष्टाचार, धनबल, और हिंसा की शिकायतों का त्वरित निपटारा। चुनाव आयोग और न्यायपालिका के साथ समन्वय कर कार्रवाई। इस हेतु सेवानिवृत्त न्यायाधीशों, सिविल सोसाइटी प्रतिनिधियों, और निर्वाचन विशेषज्ञों की एक बहु–सदस्यीय समिति समिति बनाई जा सकती है।

डिजिटल मतदान और तकनीकी उन्नयन :

प्रवासी मजदूरों और दूरस्थ क्षेत्रों के मतदाताओं के लिए मोबाइलध्ऑनलाइन वोटिंग की व्यवस्था। इस संदर्भ में सुरक्षा उपाय निम्न कार्य किए जा सकते है–

- ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी का उपयोग कर मतदान को हैक–प्रूफ बनाना।
- साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों की टीम द्वारा निरंतर निगरानी।

मीडिया नियमन और सोशल मीडिया जवाबदेही :

इस संदर्भ में चुनावी प्रक्रिया हेतु एवं पारदर्शिता हेतु निम्न कार्य किए जा सकते है–

- मीडिया नैतिकता कोड लागू करना, जो झूठे प्रचार और हेट स्पीच पर रोक लगाए।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को चुनावी अवधि में फेक न्यूज फ्लैग करने के लिए बाध्य करना।
- राजनीतिक विज्ञापनों के लिए वित्तीय स्रोतों का खुलासा अनिवार्य बनाना।

निष्कर्ष :

भारतीय चुनाव प्रणाली की ये चुनौतियाँ न केवल चुनावी निष्पक्षता बल्कि लोकतंत्र की मूल भावना को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति, नैतिक जागरूकता, और संस्थागत सुधारों की आवश्यकता है। जनता की भागीदारी, मीडिया की जवाबदेही, और न्यायपालिका की सक्रिय भूमिका से ही भारतीय लोकतंत्र इन चुनौतियों को पार कर सकता है। अंततः, चुनाव प्रणाली का उद्देश्य सिर्फ सरकार चुनना नहीं, बल्कि समाज में न्याय, समानता, और विश्वास को स्थापित करना होना चाहिए।

References:

1. Election Commission of India. (2020). *Handbook for Returning Officers*. Government of India. Retrieved from https://eci.gov.in
2. Kumar, S. (2019). Electoral reforms in India: Challenges and prospects. *Journal of Political Studies, 25*(2), 45-67. https://doi.org/xxxxx
3. Yadav, Y. (2018). Democracy and electoral politics in India. *Economic and Political Weekly, 53*(9), 12-18. Retrieved from https://www.epw.in
4. Shukla, A. (2021). Electoral malpractices in India: An assessment of administrative loopholes. *Indian Journal of Public Administration, 67*(3), 256-278. https://doi.org/xxxxx
5. Mitra, S. (2017). The role of Election Commission in ensuring free and fair elections in India. *Asian Journal of Governance and Law, 12*(1), 78-95.
6. Rai, P. (2022). Social media, misinformation, and electoral integrity: A case study of Indian elections. *Journal of Digital Politics, 10*(4), 341-360. https://doi.org/xxxxx
7. Srivastava, R. (2020). Electoral corruption and money power in Indian democracy. *Journal of South Asian Studies, 15*(2), 89-112. https://doi.org/xxxxx
8. Bhardwaj, N. (2019). Booth capturing and electoral violence in India: A historical perspective. *Indian Political Science Review, 47*(1), 22-45.
9. Verma, M., & Singh, K. (2021). The effectiveness of EVM and VVPAT in Indian elections: A critical analysis. *Journal of Electoral Studies, 18*(3), 155-176.
10. Mehta, P. B. (2018). The crisis of electoral democracy in India. *Cambridge University Press.* https://doi.org/xxxxx

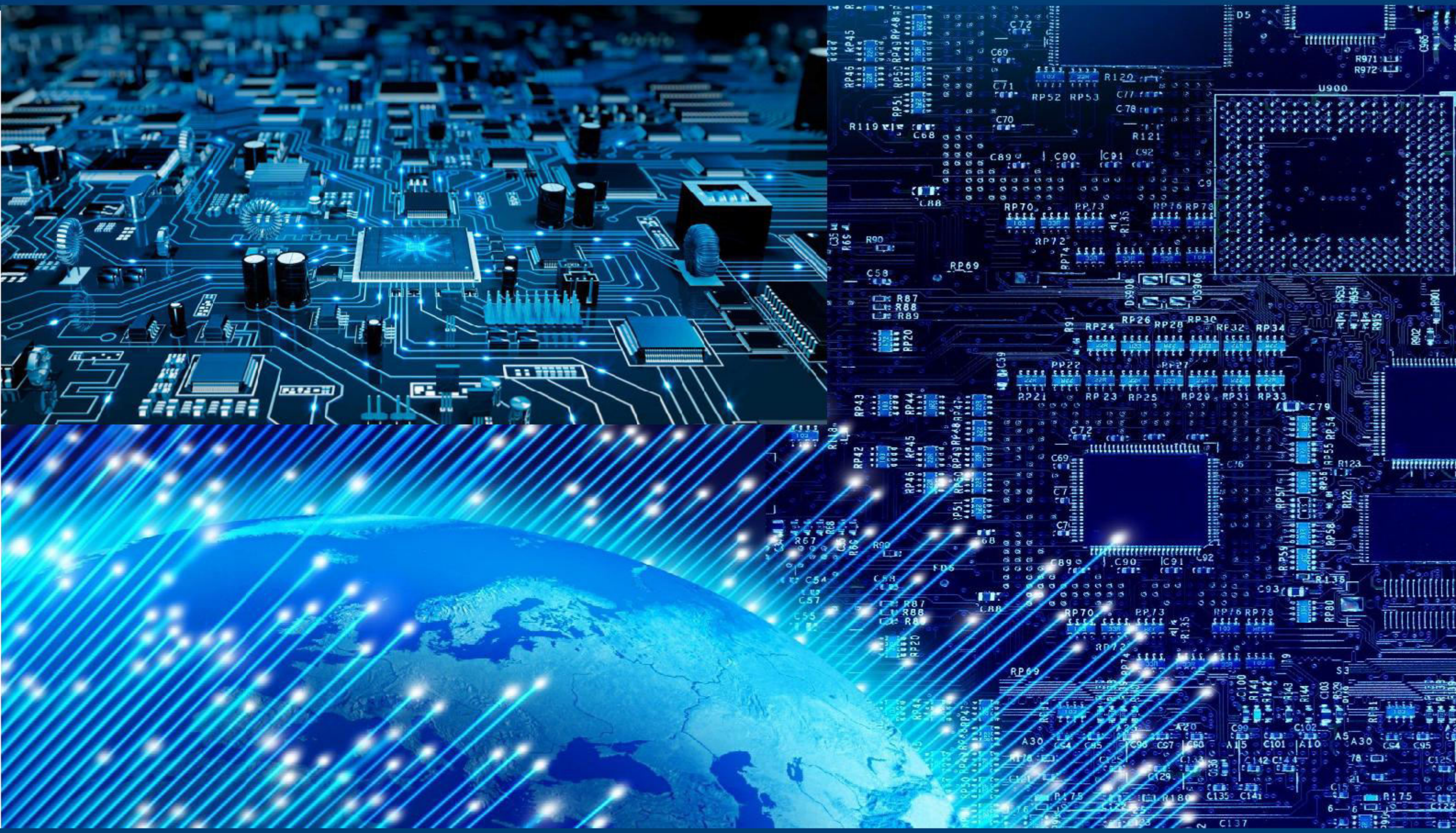

IJARASEM

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com